ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

अस्तित्व उपन्यास में स्त्री अस्मिता की खोजः लेखक ज्ञानप्रकाश विवेक

मिस वैशाली दत्तात्रय शिंदे

शोधार्थी, एसएमबीएसटी, कला, विज्ञान और वाणिज्य कॉलेज, संगमनेर

सारांश

अस्तित्व उपन्यास न केवल एक स्त्री के संघर्ष को चित्रित करती है,बल्कि उसकी आशाओं,महत्वाकांक्षाओं,प्रेम व कोमल भावनाओं,वास्तविकता और जिज्ञासा सहित उसकी दुनिया के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करती है। पितृसत्तात्मक संस्कृति में,एक स्त्री हमेशा जागरूक रहती है और अपनी स्वायत्तता की रक्षा के लिए प्रयास करती है। इसके बाद,उसे अकेलेपन से जूझना पड़ता है। स्त्री अस्मिता के रुप में पात्र सरयू,प्रस्तुत उपन्यास में कल्पनाशील,सुसंस्कृत और आधुनिक है। प्रत्येक स्त्री का अपना संसार है,जिसमें भय और संशय निश्चित रूप से एक ऐसी शक्ति हैं जो उसे सामन्ती और उपभोक्तावादी संस्कृति से बचाने में मदद करती है। उसकी लड़ाई खोखले कुलीनतावादियों से नहीं है,बल्कि जटिलताओं,अनैतिक विचारधारा और पाखण्ड से भी जुड़ी है। भौतिकतावाद की दुनिया अन्धकारपूर्ण है। लेकिन उस पर प्रकाश का एक दृश्य है जिसे देखकर उपन्यास की पात्र स्वयं को छला हुआ महसूस करती है। फिर भी,वह पुरुष नियतवाद से टकराती है और स्वतंत्रता की ओर बढ़ने की कोशिश करती है और अपने संघर्षों के साथ नैतिकता के पथ पर अग्रसर रहती है।

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

मुख्यबिन्दु- स्त्री अस्मिता,अस्तित्व उपन्यास,स्त्री की स्थिति,सामाजिक जटिलताएँ

प्रस्तावना

अपनी उपस्थिति या पहचान के प्रति सचेत रहना ही अस्तित्व का अर्थ है। जहां तक स्त्री की बात है तो वे अब अपने अस्तित्व की तलाश में भटक रही हैं। वर्तमान प्रगति और अपनी सामाजिक,राजनीतिक और आर्थिक सफलताओं के बावजूद,स्त्री अभी भी इस सवाल पर दुखी हैं कि कब तक उन्हें केवल वस्तुओं के रूप में इस्तेमाल और आनंद लिया जाएगा।[1]कब तक स्त्री की अस्मिता और अस्तित्व का समाज द्वारा अवमूल्यन किया जाएगा? कब तक सत्ता के पदों पर बैठे पुरुष स्त्री को महज एक देह से अधिक कुछ नहीं देखेंगे?आज की स्त्री को इस मानसिकता से मुक्त होना होगा,अपनी शारीरिक बनावट के पीछे से निकलना होगा और अपनी इच्छाशक्ति की प्रबलता सभी को मनवाना होगा। ऐसा करने के लिए,यह महत्वपूर्ण है कि वह स्वयं का सामना करे। ज्ञान प्रकाश विवेक को 1980 के दशक के उत्तरार्ध से समकालीन हिंदी लेखन में एक प्रतिभाशाली प्रकाश के रूप में माना जाता है, उन्होंने विभिन्न विधाओं पर शानदार तरीके से लिखा है। स्त्री विमर्श को आधार बनाकर साहित्य जगत में कई लेखिकाओं और लेखिकाओं ने लिखा है।[2]उपन्यास,कविता संग्रह,गजल संग्रह,कहानी संग्रह और आलोचना सहित साहित्यिक कार्यों का उपयोग करके हिंदी साहित्य पर काम को बढ़ाया। महिलाओं के संघर्षों की कहानी होने के अलावा,विचाराधीन कार्य स्त्री मानस की संवेदनशीलता,हृदय की कोमलता और किसी की आकांक्षाओं को पूरा करने की आवश्यकता को व्यक्त करता है। जब एक महिला अपने अस्तित्व की तलाश करती है और उसकी रक्षा के लिए काम करती है तो उसे खुद ही कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।[3]अकेलेपन से निपटने के अलावा,कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे उसे झूठा मुखौटा पहनकर समाज से लड़ना होगा। फिर भी,परिस्थितियों के कारण,वह सामंती और उपभोक्तावादी संस्कृतियों में अस्तित्व की लड़ाई में लगी हुई है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

अस्तित्व से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं जैसे अस्तित्व की भावना,व्यक्तित्व,स्थिति,शक्ति,उपस्थिति इत्यादि को समाहित करता है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष और महिला दोनों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है,लेकिन वे अक्सर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं। आशारानी वोरा सवाल करती हैं कि दोनों की स्वतंत्र पहचान क्यों है,क्योंकि वे एक-दूसरे के पूरक हैं। ज्ञान प्रकाश विवेक का उपन्यास सरयू नामक पात्र के संदिग्ध अस्तित्व के माध्यम से पारंपरिक मानसिकता के विनाश का चित्रण करता है। कल्पनाशील,स्वाभिमानी और भावुक हृदय वाली आधुनिक स्त्री सरयू अपने अस्तित्व और पहचान के साथ संघर्ष करती है। वह अपने भीतर की सच्चाइयों की सच्चाई या छाया के पथ पर चलने के लिए संघर्ष करती है,लेकिन अंततः हार मान लेती है और घबरा जाती है। अपने संघर्षों के बावजूद,सरयू का लक्ष्य अपने अस्तित्व को बचाए रखना है और उसे दुनिया के शोर या भीड़ से कोई सरोकार नहीं है।[4]उपन्यास संदेह और अकेलेपन की स्थिति में भी,किसी के अस्तित्व और उपस्थिति को संरक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है।

आधुनिक समाज में महिलाओं को शादी जैसे मामलों में मुख्यरुप से आजादी तो दी जाती है,लेकिन उन्हें ऐसा लगता है जैसे उनके अस्तित्व पर किसी और का अधिकार है। प्रस्तुत उपन्यास में सरयू के पिता को एक उच्च मानसिक स्तर वाली लड़की का विज्ञापन मिलता है,लेकिन उन्हें पता चलता है कि लड़के के पास एक बैरोमीटर है जिसे पढ़ा नहीं जा सकता। सरयू को उसके प्रयोग का शिकार बनने के लिए मजबूर किया जाता हैऔर एक अज्ञात घमंडी लड़का कुछ सवालों के जवाब देने के बाद उससे शादी करने के लिए सहमत हो जाता है। सरयू को ऐसा महसूस होता है जैसे उसके अंदर भावनाओं की एक खूबसूरत दुनिया टूट रही है और इस टूटने की किसी को खबर तक नहीं है।[5]हर कोई चाहता है कि उसे घमंडी लड़के से छुटकारा मिल जाए और शादी कोई मुश्किल काम नहीं है जिसे बाद में निपटाया जा सके।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

अस्तित्व का एहसास होने के बावजूद भी एक महिला तब असहाय और बंधी हुई महसूस करती है जब उसे न चाहते हुए भी अपने परिवार के आदेश पर सब कुछ करने के लिए विवश किया जाता है।

परिवार और समाज दोनों में,हर कोई एक स्त्री से अपेक्षा करता है कि वह जो कुछ भी करेगी वह उसकी इच्छानुसार हो, जिससे महिलाओं के लिए अपना रास्ता खोजना और अपने जीवन में खुशी ढूंढना मुश्किल हो जाता है। समाज में उन महिलाओं का एक सीमित वर्ग है जिनकी विशिष्ट गुणों और अधिकारों के कारण उनकी स्थिति समाज में बेहतर बनी हुई है,अन्यथा आज भी अधिकांश महिलाओं का वजूद किसी के लिए मायने नहीं रखता है। अस्तित्व उपन्यास की नायिका के साथ भी यही हुआ। एक हफ्ते के भीतर वह बिना उसकी मर्जी सुनी एक ऐसे आदमी से विवाह कर दी गई जो नपुंसक था और पत्नी से कोई सरोकार नहीं था। अब मुझे लगता है कि हर जगह पुरुषवादी समाज है। महिला रहे तो कहाँ रहे?पिछले दिन से आज तक मैं यहाँ क्रमशः अजनबी हो गया हूँ। एक कांच के खिलौने की भाँति,स्वयं को महसूस कर रही है। वह यह परिकल्पना करती है कि काश,मैं बिखर जाती या फिर ध्वस्त हो जाती..।[6]भले ही उसका विवाह सामाजिक रूप से सही था,उसे घर में अपनी पत्नी होने का अधिकार कभी नहीं मिला। अतुल के पिता अपने बेटे की कमी को छिपाने के लिए सरयू को फैक्टरी का मालिक बनाना चाहते हैं। स्त्री से उसका निर्णय पूछना एक छलावे के सिवाय कुछ नहीं है क्योंकि परिवार की पितृसत्ता जो चाहेगी वही होगा। सरयू के ससुर उससे पूछते हैं कि वह क्या करेगी,तो वह सोचती है,फैसला शब्द मुझे हंसी आ गयी।क्या स्त्रियों को फैसला लेने का अधिकार है?वह फैसला करते समय कितने दबावों से गुजरती है,जैसे वह है। हाथ काटकर दस्तखत कराने वाले व्यक्ति से मैं कलम क्यों नहीं उठाता? [7]एक बार फिर सरयू को अपना अस्तित्व दिखाई देता है। यद्यपि उसे परिस्थितियों के कारण उसे ऊपर उठने पर विवश होना पड़ा,उसका मन अपनी खुद की

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

पहचान बनाना चाहता है,लेकिन मैं?मैं यहाँ मैनेजर या इसी तरह की किसी और कुर्सी पर कैसे बैठूंगा?तिनकों के पूल पर खड़े होना,किसी चीज पर अधिकार जमाना,संघर्ष और श्रम से नहीं मिलता।" [8]सरयू यथार्थ को स्वीकार कर चलने वाली आधुनिक स्त्री है जिसे अपने अस्तित्व की अभिरक्षा का आभास तो है परन्तु उसे बचाए और बनाये रखने का संघर्ष है।

अस्तित्व एक उपन्यास है जो पुरुष-प्रधान समाज में महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली आकांक्षाओं,संभावनाओं,त्रासदियों,संघर्षों और मुक्ति की इच्छा की अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करता है। सदियों से पुरुष सत्ता के तहत महिलाओं पर अत्याचार किया जाता रहा है,और समान इंसान के रूप में व्यवहार करने के लिए उन्हें इन जंजीरों को तोड़ना होगा। सरयू,एक महिला,कारखाने में कठोर निर्णय लेती है,श्रमिकों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करती है और उनका शोषण करने वाले उच्च ठेकेदार को बर्खास्त करती है। यह क्रांतिकारी कदम उनके पक्ष में कई आवाजें उठाता है। वह अपने परिवार के बीच वापस लौटने पर,स्वयं को एक सुनसान जगह पर पाती है,जहाँ उसका अहंकारी पति उसके साथ जानवरों जैसा व्यवहार करता है और उसे पीट-पीट कर मार डालता है। वह खुद को रीढ़हीन पुरुषों के बीच स्वयं को जकड़ी हुई महसूस करती है,वह हिम्मत नहीं हारना चाहती बल्कि अपने अस्तित्व के लिए लड़ रही है। सरयू ने अपने अकेलेपन को अपनी आत्मशक्ति बनाते हुए स्वयं को घर की कैद से आजाद करने का फैसला किया। रानी व्होरा का मानना है कि महिलाओं की मुक्ति सबसे पहले उनके लिए स्पष्ट होनी चाहिए और उन्हें नारीत्व के प्रति अपनी हीन भावना से छुटकारा पाना चाहिए। उन्हें समझना होगा कि वे शारीरिक या प्राकृतिक रूप से किसी पुरुष से कम नहीं हैं और सामाजिक हीनता का उन्मूलन केवल समान नागरिकता और मानवता के माध्यम से ही संभव होगा।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

अस्तित्व उपन्यास इस बात पर विशेष जोर देता है कि स्त्रियों को अपने अस्तित्व के लिए आजादी की जरूरत है,न कि सिर्फ किसी पुरुष के खिलाफ विद्रोह करने की है। उत्पीड़न की जंजीरों को तोड़कर और समानता को अपनाकर,महिलाएं उत्पीड़न के बंधनों से मुक्त हो सकती हैं और एकसमानता का जीवन व्यापन कर सकती हैं। स्त्री के जीवन की तुलना अक्सर धान के पौधे से की जाती है,जहां बीज दूसरे खेत में बोए जाते हैं और अंततः दूसरे खेत में लगाए जाते हैं। यह विशेष रूप से अस्तित्व उपन्यास की पात्र सरयू जैसी लड़कियों के लिए सच है,जिन्हें अपने पति का घर छोड़कर पूरी जिंदगी अपने पिता के घर में रहना पड़ता है। उन्हें अवांछित और अवांछनीय महसूस करते हुए अपने माता-पिता के घर लौटने की दुविधा का सामना करना पड़ता है। यह विडम्बना समाज में स्पष्ट है जहां बेटियों को बेटों के समान अधिकार और सुख नहीं है। सरयू उन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जो समाज और लोगों की परवाह किए बिना स्वतंत्र निर्णय लेती हैं और अपने ससुराल का घर,सुख-सुविधाएं और वैभव छोड़ देती हैं। हालाँकि,यह निर्णय समाज को स्वीकार्य नहीं है। सरयू एक ऐसी महिला है जो पुरुषों द्वारा पोषित भाग्यवाद से टकराकर अपनी स्वतंत्र राह बना रही है। चित्रा मुद्गल का तर्क है कि समझौते और असहमति परिवर्तन की अनिवार्यता के ज्ञान को निखारने की माध्यम मात्र हैंऔर जो लोग अपने समय को गढ़ने और तराशने की जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार हैं,उन्हें यह जिम्मेदारी उठानी चाहिए। समय में बदलाव के साथ समाज में महिलाओं की छवि भी निश्चित रूप से बदलनी चाहिए।

हिन्दी उपन्यास में स्त्री समाज

महिलाओं द्वारा लिखे गए समसामयिक उपन्यास वर्तमान समय के ज्वलंत मुद्दों और विकट बाधाओं से परिपूर्ण हैं। दोनों लिंगों ने उपन्यास लेखन के क्षेत्र में प्रगति की है,जिसके परिणामस्वरूप न केवल संख्यात्मक वृद्धि हुई है बल्कि जीवन के सभी पहलुओं में समग्र गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। मूल्य की अवधारणा पर समकालीन समाज में बहुत बहस हुई

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

है।[9]वर्तमान में,उपन्यास बदलते मूल्यों के धीरे-धीरे लुप्त होने का कारण बन रहा है। विहान ने समकालीन समय में पुस्तक के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। मध्य युग में महाकाव्य का महत्व,भारतेंदु युग के दौरान नाटक का महत्व और समकालीन समय में पुस्तक की प्रासंगिकता वारण युग में उनके महत्व से कहीं अधिक है। हिंदी महिला लेखिकाओं की रचनाएँ मूल्यों के प्रति गहरी जागरूकता से जटिल रूप से जुड़ी हुई हैं। महिला लेखिकाओं ने उपन्यास लेखन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है। उनकी अनुभूति और धारणा समाज की वास्तविकता और सत्यता के साथ अधिक निकटता से मेल खाती है। हिन्दी उपन्यासों में महिलाओं ने विशिष्ट योगदान दिया है। इसके अलावा,उनके साहित्यिक कार्यों की अक्सर उपेक्षा की गई है।[10]उपन्यास साहित्य में महिलाओं की उपस्थिति के बावजूद,पुरुषों की तुलना में उनके प्रेम के अनुभवों में अंतर्निहित अंतर के कारण उनके परिप्रेक्ष्य की पूरी समझ अस्पष्ट बनी हुई है। महिलाएं अपने स्वायत्त अस्तित्व को न केवल स्वीकारने लगी हैं,बल्कि स्थापित भी करने लगी हैं। स्नेह एक महिला के जीवन का केंद्रीय पहलू है,लेकिन इसकी अपनी सीमाएँ भी हैं। स्त्री के अस्तित्व में व्याप्त भय,घुटन,विपत्ति,स्नेहिल भावनाओं और पेशेवर मांगों को स्त्री बुद्धि से अधिक सटीक ढंग से कौन व्यक्त कर सकता है।

महिला उपन्यासकारों द्वारा स्त्री अस्तित्व अवलोकन

भारत में महिला उपन्यासकार महिलाओं के प्रति महिलाओं के दृष्टिकोण और समाज के संबंध में उनके जीवन की उथल-पुथल को खुलकर चित्रित करने में सक्षम हैं। उन्होंने मूल्य विघटन,समकालीन जीवन की जटिल संवेदनाओं और व्यंग्य दृष्टि के माध्यम से सामाजिक स्थितियों की बेतुकीता को उजागर किया है,जिससे समकालीन उपन्यासों को सामाजिक वास्तविकता को पहचानने की क्षमता मिलती है।[11],हिंदी उपन्यासों में महिलाओं की मुख्य चिंता समकालीन जीवन स्थितियों में मनुष्य की आंतरिक दुनिया को उजागर करना,बदलते जीवन परिवेश का अंतरंग विवरण और कलात्मक दृष्टि से वर्णन करना है। महिला

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

उपन्यासकारों ने संवेदनशीलता विहीन जीवन स्थितियों अथवा संवेदनशीलता विहीन जीवन स्थितियों के मर्म को भी उजागर किया है। उनकी रचनाएँ लोगों के जीवन का जीवंत ग्रंथ बन गई हैं,जो नारी मन की विभिन्न भावनाओं और ईश्वर के संबंध में आज की शिक्षित लड़कियों के विचारों को उजागर करती हैं। महिला उपन्यास साहित्य मुख्य रूप से मध्यम वर्ग पर आधारित है,जो उनकी आर्थिक स्थिति और परिवार के केंद्र बिंदु के रूप में महिला पर आधारित है। बाह्य मामलों के विश्लेषण की सहायता से उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में नारी चरित्र को पूर्णतः उजागर किया है,सामाजिक अन्यायों को उजागर किया है तथा नारी के उत्थान एवं पतन का आकलन अपने दृष्टिकोण से किया है।[12]अस्सी के दशक की महिला उपन्यासकारों में उन्होंने मानव जीवन का वर्णन करने में मनोविज्ञान के अवचेतन दृष्टिकोण का प्रयोग करते हुए महिलाओं की आंतरिक आत्मा का विशद विश्लेषण करने का कार्य किया है।

शोध की आवश्यकता

शिक्षा एवं स्वतन्त्रता के अभाव के कारण स्वतन्त्रता से पूर्व हमारे देश में स्त्री की स्थिति बड़ी विकट हो रही है। इसलिए राष्ट्रीय अभिलेखों में महिलाओं की भूमिका नगण्य रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश की स्थिति में जो परिवर्तन हुआ है। उनका प्रभाव स्त्री समाज पर भी पड़ा है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण स्त्री जीवन के सभी क्षेत्रों में सक्रिय दिखाई देने लगी। हालाँकि,असलियत में मात्रा कम ही रही है। स्त्री की समान रचना,शक्ति एवं योग्यता को लेकर प्राचीनकाल के कथाकारों ने अपना विषय बनाया और स्त्री की रचना से संबंधित अनेक नारी कथाकारों का भी योगदान रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में अस्तित्व उपन्यास के माध्यम से स्त्री अस्मिता की सकारात्मकता एवं नकारात्मक पर आधारित सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का एक प्रयास है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

उद्देश्य

- हिंदी साहित्य में स्त्री का स्थान निश्चित कर उन्हें अवगत करना।
- भारतीय संस्कृति में स्त्री के वर्तमान परिपेक्षय में नारी के अस्तित्व को सिद्ध करना।
- अस्तित्व उपन्यास में स्त्री की अस्मिता का सामाजिक जीवन।

निष्कर्ष

वर्तमान परिस्थितियों के अनुरुप आदर्श महिला वह है जो संघर्षों का सामना कर सके,अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके और अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित कर सके। इसका मतलब पुरुष विरोधी बनना नहीं,बल्कि समानता और आपसी सहयोग को बढ़ावा देना है। यही अस्तित्व उपन्यास की स्त्री अस्मिता के सन्दर्भ में सार्थक जीवन जीने की कला है। स्वयं के प्रति जागरूक होकर,व्यक्ति अपनी सुरक्षा का भार उठा सकता है,आसक्ति से मुक्त हो सकता है और निर्णय लेने का साहस कर सकता है। प्रत्येक महिला को वास्तव में मुक्त आकाश में स्वतंत्र रूप से घूमने के लिए भय,तनाव,जीवन की जटिलताओं,असुरक्षा और अकेलेपन को त्यागना होगा। इसके लिए भय,तनाव,जटिलताओं,प्रतिकूल परिस्थितियों और असुरक्षा की भावनाओं पर काबू पाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा,रामचंद्र,लोकभारती प्रमाणिक शब्दकोश,इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन, 1996,पृष्ठ 232
2. विवेक,ज्ञान प्रकाश,अस्तित्व,नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, 2005,पृष्ठ 7
3. विवेक,ज्ञान प्रकाश,अस्तित्व,नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, 2005,पृष्ठ 30
4. विवेक,ज्ञान प्रकाश,अस्तित्व,नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, 2005,पृष्ठ 148
5. व्होरा,आशारानी,स्त्री सरोकार,दिल्ली, आर्य प्रकाशन मण्डल, 2006,पृष्ठ 31

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 07, 2022

6. विवेक,ज्ञान प्रकाश,अस्तित्व,नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, 2005,पृष्ठ 86
7. विवेक,ज्ञान प्रकाश,अस्तित्व,नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, 2005,पृष्ठ 130
8. विवेक,ज्ञान प्रकाश,अस्तित्व,नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, 2005,पृष्ठ 132
9. विवेक,ज्ञान प्रकाश,अस्तित्व,नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक, 2005,पृष्ठ 215
10. गर्ग,शकुन्तला,महिला उपन्यासकारः मूल्य चेतना,अभिषेक प्रकाशन, 16 अरविन्द पार्क टोंक फाटक,जयपुर
11. गणेशन (डॉ.),हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन,राजपाल एण्ड संस,दिल्ली,संस्करण, 1962
12. सिंह,रूपा (डॉ.),स्त्री अस्मिता और कृष्णा सोबती,पूर्वोदय प्रकाशन,नई दिल्ली, 2008